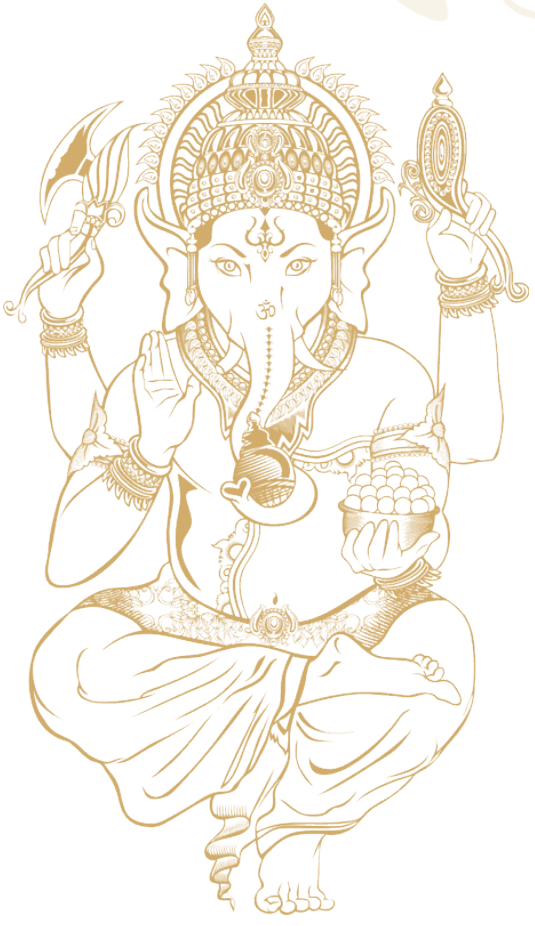

Rajvardhan Gautam

Vidhushi

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121436302

पुल्लिंग :	लिंग	: स्त्रीलिंग
14/11/1997 :	जन्म तिथि	: 13/11/2000
शुक्रवार :	दिन	: सोमवार
घंटे 14:20:00 :	जन्म समय	: 14:22:00 घंटे
घटी 19:16:14 :	जन्म समय(घटी)	: 19:22:35 घटी
India :	देश	: India
Agra :	स्थान	: Sadabad
27:09:00 उत्तर :	अक्षांश	: 27:27:00 उत्तर
78:00:00 पूर्व :	रेखांश	: 78:03:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व :	मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व
घंटे -00:18:00 :	स्थानिक संस्कार	: -00:17:48 घंटे
घंटे 00:00:00 :	ग्रीष्म संस्कार	: 00:00:00 घंटे
06:37:30 :	सूर्योदय	: 06:37:15
17:27:18 :	सूर्यास्त	: 17:26:56
23:49:32 :	चित्रपक्षीय अयनांश	: 23:51:51

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शुक्र 2वर्ष 2मा 29दि		27:46:31	कुंभ	लग्न	कुंभ	27:28:16	चन्द्र 4वर्ष 7मा 16दि	
राहु		28:11:33	तुला	सूर्य	तुला	27:25:07	राहु	
12/02/2023		25:10:09	मेष	चंद्र	वृष	17:09:43	30/06/2012	
12/02/2041		10:02:52	धनु	मंगल	कन्या	11:50:41	01/07/2030	
राहु	25/10/2025	15:50:04	वृश्चि	बुध	तुला	08:23:14	राहु	14/03/2015
गुरु	20/03/2028	20:28:27	मक	गुरु व	वृष	14:14:36	गुरु	06/08/2017
शनि	25/01/2031	14:57:56	धनु	शुक्र	धनु	06:28:02	शनि	12/06/2020
बुध	13/08/2033	20:36:29	मीन व	शनि व	वृष	04:07:36	बुध	31/12/2022
केतु	01/09/2034	23:48:38	सिंह व	राहु व	मिथु	23:00:40	केतु	18/01/2024
शुक्र	01/09/2037	23:48:38	कुंभ व	केतु व	धनु	23:00:40	शुक्र	18/01/2027
सूर्य	26/07/2038	11:18:53	मक	हर्ष	मक	23:09:55	सूर्य	13/12/2027
चन्द्र	25/01/2040	03:43:07	मक	नेप	मक	10:09:29	चन्द्र	12/06/2029
मंगल	12/02/2041	11:07:24	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	18:03:49	मंगल	01/07/2030

लग्न-चलित

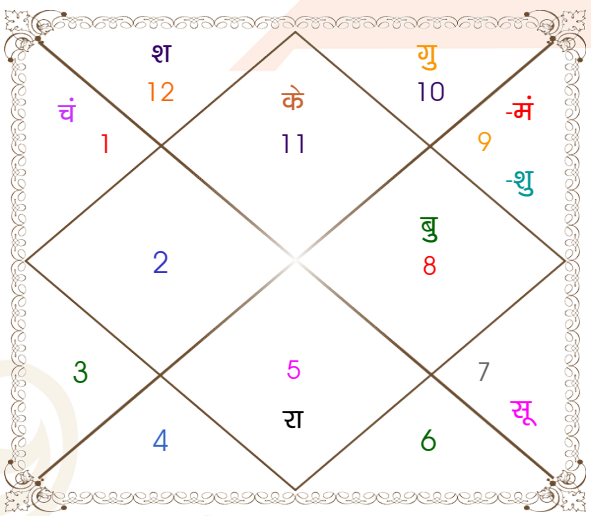

लग्न-चलित

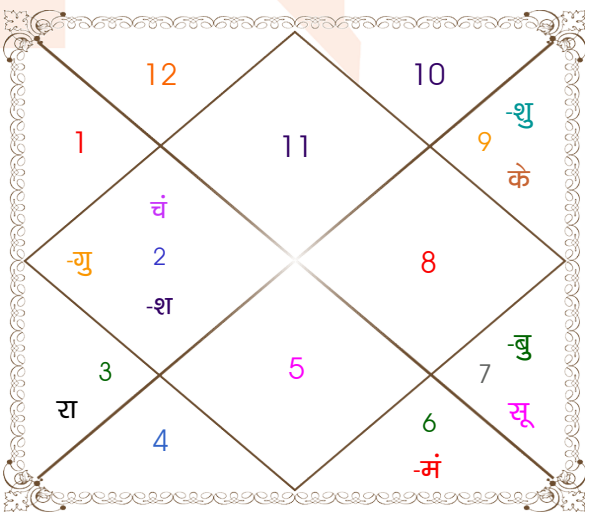

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	चतुष्पाद	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	मित्र	विपत	3	1.50	--	भाग्य
योनि	गज	सर्प	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	शुक्र	5	3.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मेष	वृष	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	23.50		

भकूट दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता नहीं है।

त्रंअंतकींद ळंनजंउ का वर्ग मृग है तथा टपकीनींप का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार त्रंअंतकींद ळंनजंउ और टपकीनींप का मिलान शुभ है।

मंगलीक दोष मिलान

त्रंअंतकींद ळंनजंउ मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है।

टपकीनींप मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल त्रंअंतकींद ळंनजंउ कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रंअंतकींद ळंनजंउ तथा टपकीनींप में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।